Vol 4 Issue 12 June 2015

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

International Recognized Double-Blind Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal
Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063 Impact Factor :3.4052(UIF)
Volume - 4 | Issue - 12 | June - 2015 Available online at www.aygrt.isrj.org

lkdsr vkSj la;qDr ifjokj

vke izdk'k cSjok
'kks/kFkhZ] fgUnh foHkkx] fnYyh fo'ofo|ky;-

Short Profile

Om Prakash bairava is a researcher at English Department in University of Delhi.

Co-Author Details :

lat; dqekj flag
ih-th-Mh-oh- dkyst fnYyh fo'ofo|ky; -

izLrkouk :

'साकेत' मैथिलीशण गुप्त का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। इसमें अपने युग के जीवन को समग्रत: चित्रित करने का प्रयास किया गया है। इसमें द्विवेदीयुगीन नीतिमत्ता, आदर्श, पुनरूत्थानवादी सांस्कृतिक चेतना, मानवतावादी मानव-मूल्य आदि को प्रत्यक्षत: देखा जा सकता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल साकेत के महत्व को प्रतिपादित करते हुए लिखते हैं, '''साकेत' की रचना तो मुख्यत: इस उद्देश्य से हुई कि उर्मिला काव्य की उपेक्षिता न रह जाय।'' लेकिन इसका नाम उर्मिला न रखकर 'साकेत' क्यों रखा गया? संभवत: कवि उर्मिला को साकेत के नर-नारियों, नदी-कछारो, प्रात: दुपहर, संध्या, रात्रि, लोग-बाग की चर्चाओं और समस्याओं आदि से सम्बद्ध करना चाहता था। अन्यथा उर्मिला की चारित्रिक पूर्णता संभव नहीं थी। इसीलिए डॉ. नगेन्द्र 'साकेत' एक अध्ययन में उर्मिला और लक्ष्मण को इस काव्य के नायक-नायिका मानते हुए कहते है कि- 'उसका कार्य उर्मिला-लक्ष्मण मिलन है।' इस प्रकार नन्द किशोर नवल के अनुसार उर्मिला के चरित्र में डूबकर गुप्त जी ने यह पाया कि उसका आधार संयुक्त परिवार के आदर्श में उसकी निष्ठा है।

इस प्रकार साकेत में रघु-परिवार के सुख-दुख का वर्णन है। जो हिन्दू-ग्रहस्थ परिवार का आदर्श है। इसमें जीवन के अनेक सफल चित्र है- पति-पत्नी है, पिता है, पुत्र-पुत्रियाँ है, माताएँ हैं, देवर-भाभी हैं, सासें और पुत्र-वधुएँ हैं, स्वामी और

सेवक हैं, परंतु विभिन्न व्यक्तियों से बना हुआ यह परिवार एक संपूर्ण समष्टि है। गुप्तजी संयुक्त परिवार का आदर्श चित्र प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं-

''एक तरू के विविधा सुमनों से खिले;
पौरजन रहते परस्पर है मिले।
एक भी आंगन नहीं ऐसा यहाँ,
शिशु न करते हों कलित क्रीडा जहाँ।
कौन है ऐसा अभागा ग्रह कहो,
साथ जिसके अश्व-गोशाला न हो।''

विवाहोपरांत उर्मिला ससुराल आते ही चौदह वर्षो के लिए उसके पति भातृ-प्रेम में उससे वियुक्त हो गए और वह कुछ न बोली। उसके इसी त्याग ने उसका कद सीता से भी बड़ा कर दिया। लक्ष्मण का त्याग भी बड़ा था, पर वे अपने आराध्य और आराध्या के सन्निकट तो थे। उर्मिला बिलकुल अकेली थी और यह विष उसे बिना बोले पीना था। 'साकेत' के 'चतुर्थ सर्ग' में गुप्तजी ने उसकी और लक्ष्मण की स्थिति का बेहद सटीक ही नही सुंदर वर्णन भी किया है। जैसे- उर्मिला-वचन अपने प्रति:

'कहा उर्मिला ने-हे मन! तू प्रिय-

पथ का विघ्न न बन'
सीता-वचन उर्मिला के प्रति:
'आज भाग्य जो है मेरा,
वह भी हुआ न ता! तेरा!'
और राम-बचन लक्ष्मण के प्रति:
'लक्ष्मण, तुम हो तपस्पृही
मैं वन में भी रहा ग्रही
व्नवासी, हे निर्मोही
हुए वस्तुत: तुम दो ही।'

इस प्रकार गुप्तजी ने उर्मिला और लक्ष्मण के त्याग के मूल में संयुक्त परिवार में उनकी निष्ठा को माना है।

'संयुक्त परिवार का विघटन' आधुनिक मानव समाज की सबसे बड़ी और ज्वलंत समस्या है, क्योंकि औद्योगिक सभ्यता के दबाव से कृषि-आधारित संयुक्त परिवार का विघटन और उसके स्थान पर व्यक्तिगत परिवार अस्तित्व में आ गया जिससे 'वसुधैव कुटुम्बकुम' का आदर्श देने वाला भारत आज स्वयं इससे जूझ रहा है। रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार- ''साकेत में कवि ने न केवल पौराणिक चरित्रों की नयी व्याख्या की है, बल्कि नारी-जीवन को एक नयी आस्था और कोमलता और साथ ही नया आत्म विश्वास प्रदान किया है। जैसे तुलसी मूलत: पारिवारिक जीवन के चितेरे है वैसे ही आधुनिककाल में मैथिलीशरण गुप्त। दोनों का एक मूल स्त्रोत राम-कथा है, जो भारतीय परिवार की उज्ज्वलतम गाथा है। रामायण में यदि परिवार-जीवन का मांगल्य और सौहार्द है तो महाभारत में बिखराब और टूटन। कि साकेत में मैथिली शरण गुप्त के दृष्टिकोण में तर्क और आस्था का एक प्रीतिकर मिश्रण है।'

इस प्रकार गुप्त जी कह यह भावना 'साकेत' में पूर्णरूप से साकार हुई है। इसमें दशरथ 'सच्चे परिवार-भार-घार' हैं और उनके परिवार के शेष पात्रों का चरित्र भी संयुक्त परिवार के प्रति निष्ठा और उसकी मर्यादा से ही निर्देशित होता है: और तो और कैकेयी के पश्चाताप के पीछे भी यही चीज है, यथा उसका यह कथन:

''युग-युग तक चलती रहे कठोर कहानी,
रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी,
निज जन्म-जन्म में सुने जीव यह मेरा-
धिक्कार! उसे था महास्वार्थ ने घेरा।''

संयुक्त परिवार के मूल में स्त्री-पुरूष का संबंध महत्वपूर्ण है। यधपि डॉ. नगेन्द्र स्त्री-पुरूष के नैकट्य का प्रमुख कारण 'काम' को मानते है। लेकिन यही स्त्री-पुरूष का संबंध विपत्ति के समय जीवन में दृढ़ अवलब बन जाता है। पुरूष की विपत्ति को उसकी व्यथा और परिताप को समझने और हल्का करने में स्त्री से अधिक और कौन सहायक हो सकता है? पिता की मृत्यु और राम के वन-गमन से भरत पर शोक का पहाड़ टूट पड़ता है। ऐसे में उनकी व्यथा को - उनके दु:ख दर्द को समझने वाली मांडवी ही है। माताओं और उर्मिला आदि की करूण कहानी सुनकर भरत के संतप्त ह्दय से एक आह निकल जाती है- और वे कह उठते है:

''एक न मैं होता तो भव की क्या असंख्यता घट जाती?
छाती नही फटी यदि मेरी, तो धरती ही फट जाती।''

यहाँ परिवार के छिन्न-भिन्न होने और शोकाकुल होने का कारण भरत स्वंय को ही मान रहे हैं, जो उनकी संयुक्त परिवार के प्रति होने वाली निष्ठा का द्योतक है।

डॉ. नन्द किशोर नवल 'साकेत के द्वादश सर्ग' की व्याख्या-विश्लेषण करते हुए कहते हैं कि- वसिष्ठ अपने योग-बल से अयोध्या वासियों को युद्ध का दृश्य दिखलाते हैं। यहाँ उर्मिला, लक्ष्मण और वसिष्ठ है, तो दूसरे पात्र भी, यथा मांडवी और शत्रुघ्न। यद्यपि इस काव्य का समापन उर्मिला-लक्ष्मण-मिलन से हुआ है लेकिन वह उनके संयुक्त परिवार के लिए किए गए उच्चतर त्याग के कारण, न कि उनके इस काव्य के नायक-नायिका होने के कारण। इस सर्ग में (द्वादश) संयुक्त परिवार का आदर्श ही है जो शत्रुघ्न को युद्ध में जाने से रोकते हुए कौसल्या कहती है:

'हाय! गए सो गए, रह गए सो रह जावें
जाने दूँगी तुम्हें न, वे आवें जब आवें।'

यहाँ कौसल्या अपने पुत्र और पुत्र-वधु की सहायता के लिए भी शत्रुघ्न को छोड़ना मंजूर नहीं करतीं, बल्कि उन दोनों से अधिक महत्व उन्हें देती हैं। अंत में 'देखूँ, कौन छीनते मुझसे आता?' कहकर 'पकड़ पुत्र को लिपट गई कौसल्या माता'। उधर सुमित्रा राम-सीता के लिए अपने दूसरे पुत्र को भी न्यौछावर करने को तैयार है:

'जीजी, जीजी, उसे छोड़ दो, जाने दो तुम।
सोदर की गति अमर-समर में पाने दो तुम।'

वही भरत शत्रुघ्न से कह चुके हैं कि 'माताओं से माँग विदा मेरी भी लेना। मैं लक्ष्मण पथ-पथी, उर्मिला से कह देना।' कैकेयी की प्रतिक्रिया भी सुमित्रा वाली ही है:

'भरत जाएगा प्रथम और यह मैं जाऊँगी
ऐसा अवसर भला दूसरा कब पाऊँगी।'

कैकयी में ममत्व अन्य माताओं से अधिक है। वह भरत को ही नहीं, राम को भी उतना ही, उससे ज्यादा करती है। इसीलिए तो वह कहती है:

'होने पर प्राय: अर्ध-रात्रि अंधेरी
जीजी, आकर करती पुकार थीं मेरी-
'लो कुहुविन, अपना कुहुक, राम यह जागा,
निज मंझली मां की स्वप्न देख उठ भागा।'

यहाँ हिंदू पारिवरिक जीवन का एक बड़ा मधुर अनुभव छिपा हुआ है। सम्मिलित सुखी परिवारों में प्राय: ऐसा होता है कि बच्चे अपनी माता के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रहदेवी, पितृव्या, मातामही आदि से हिल जाते हैं, इस अनुभव में पारस्परिक स्नेह और सौहार्द का रहस्य है ऐसे ही परिवार सुख-संपन्न होते हैं। यही कारण है कि मंथरा के भेद-भरे स्वर को सुनकर कैकेयी कह उठती है:

'वचन क्यों तू कहती है वाम?
नहीं क्या तेरा बेटा राम?'

इतना ही नहीं 'साकेत' में सास-बहू के मधुर संबंध का भी बड़ा सुंदर व्याख्यान है। कौशल्या मंदिर में देवार्चन में लगी हुइ है और इनके पास ही जनक-सुता (सीता) खड़ी हैं, जो:

'माँ क्या लाऊं कह-कहकर,
पूछ रही थी रह-रहकर,
क्भी आरती, धूप कभी,
सजाती थीं सामान सभी
दोनों शोभित थी ऐसी।
मैना और उमा जैसी।'

इसके अतिरिक्त देवर-भाभी के स्विग्ध संबंध की बानगी भी साकेत में मिलती है- सीता और लक्ष्मण के संबंध में यद्यपि वात्सल्य का ही आधिक्य है परंतु फिर भी साकेत के लक्ष्मण की दृष्टि सीता के नुपुरों से कभी उठती ही न हो यह बात नहीं। प्रयागराज में गंगा-यमुना के संगम को देखकर सीता-लक्ष्मण के हर्ष- गद्-गद् कह उठती है:

'श्याम और तुम एक प्राण दो देह ज्यों।'
इस पर - रामानुज (लक्ष्मण) ने कहा कि:
'भाभी क्यों नहीं,
सरस्वती सी प्रकट जहां तुम हो रहीं।'
तो सीता भी तुरंत ही प्रत्युतर देती हैं:
देवर मेरी सरस्वती अब है कहां,
संगम-शोभा देख निमग्न हुई यहाँ।'

इसी प्रकार उर्मिला-शुत्रघ्न का परिहास-यद्यपि मर्यादा की परिधि में बंधकर भी खास तरह की मनोरंजकता में बदल गया है:

'लाई सखि मालिनें थी डाली उस बार जब, / जंबू-फल जीजी ने लिए ये, मुझे याद है।।
मैने थे रसाल लिए देवर खड़े थे पास, / हंसकर बोल उठे निज-निज स्वाद है?'

साकेत में संयुक्त परिवार की रीढ़ माने जाने वाले संबंध (भाई-भाई का प्रेम) का वर्णन अद्वितीय है। साकेत का लक्ष्मण चंचल और उद्धत छोटा भाई है जो बड़े भाई के लिए मरने-मारने तक को तैयार है, परंतु अवसर आने पर वह राम की एक-आध तीखी बात भी सुना देता है:-

(1) प्रतिषेध आपका भी न सुनूंगा रहा में।
(2) आशा अन्त: पुर मध्यवासिनी कुलटा,

सीधे है आप, परंतु जगत है उलटा।'

'साकेत' में राम की बहिन 'शांता' का भी उल्लेख है। कौशिक के साथ राक्षसों से यज्ञ की रक्षा करने के लिए दशरथ पुत्र जा रहे है तब 'शांता' उन्हें राखी बांधने के प्रसंग मे सामने आती है:

'प्रभु ने चलते हुए कहा, अब शांते भय सोच क्या रहा,
भगिनी, जयमूर्ति-सी झुकी, यह राखी जब बांध तू चुकी?'

संयुक्त हिदू परिवार में बहन का महत्वपूर्ण स्थान है। 'साकेत' में ननद-भाभी के मधुर संबंध की झांकी भी मिलती है-

'प्रिय ने कहा था, प्रिय, पहले ही फूला यह,
भीति जो थी इसको तुम्हारे पदाघात की।'

डॉ० बच्चन सिंह के अनुसार - साकेत में परिवार के वृत में सभी चरित्र विशेष प्रकार की आत्मीयता लिए हुए हैं। सच पूछिए तो गुप्त जी पारिवारिक परिवेश के कवि है। उन्होंने-अपने को 'कौंटुबिक कविमात्र' कहा है। इस पारिवारिक भावमषता

के कारण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे 'गार्हस्थ्य रस' की संज्ञा दी है। कौशल्या के शब्दों में 'साकेत' और संयुक्त परिवार की पूरी रचना इस प्रकार है, क्योंकि इसके विघटन को रोकने के लिए प्रत्येक पात्र कमर इस लेता है:-

'तुमने निज सत्य-धर्म पाला,
सुत ने स्वापत्य-धर्म पाला,
पत्नी-पति-संग बनी देवी,
प्रिय अनुज हुआ अग्रज सेवी
जो हुआ सभी अविचित्र हुआ,
पर धन्य मनुष्य-चरित्र हुआ।'

अंत में यही कहा जा सकता है कि मैथिलीशरण गुप्त ने प्रेम, त्याग, उदारता, निस्प्रहता आदि मानवीय गुणों को ध्यान में रखते हुए पति-पत्नी, देवर-भाभी, माँ-बेटा, सास-बहू, स्वामी-सेवक आदि के मर्यादापूर्ण संबंधों को चित्रित करना ही अपना मुख्य लक्ष्य रखा है। ऐसा लगता है कि उनके आदर्श चरित्र साधक चरित्र रहे है क्योंकि वे स्वयं साधक कवि थे। परिवार उस समय का आदर्श था। मध्यकाल में जहाँ तुलसी तथा आधुनिक काल में प्रेमचन्द्र, शुक्ल और परवर्ती दौर के लेखक मुक्तिबोध ने भी जोर दिया है।

lnHk xFk

(1)साकेत एक अध्ययन: डॉ० नगेन्द्र नेशनल पब्लिशिंग हाऊस संस्करण - 2006
(2) मैथिलीशरण : नन्द किशोर नवल
(3) हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, लोक भारती प्रकाशन संस्करण - 2011
(4) हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोक भारती प्रकाशन संस्करण - 2010
(5) आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ० बच्चन सिंह, लोक भारती प्रकाशन संस्करण - 2012

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org